दिसंबर 2022, अंक-2

तर्जनी

स्त्री स्वर केंद्रित तिमाही

आज़ादी और स्त्री

चीख़

हर एक चीख़ पर
निकल पड़ता है एक ईश्वर
अपने विराट परों को लहराता
अपने परिधान को आसमान भर में उड़ाता ।

कई तरह के हैं ईश्वर
इस धरती पर
हम कभी भी सक्षम नहीं हो पाएँगे
इतना हँसने या रोने के लिए
उन्हें लुभाने के लिए, जहाँ वे जा छुपते हैं ।

भले ही ठहाके हों या आँसू,
इनसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता :
ज़रूरी चीज़ है चीख़ ।

रोमानियाई कवयित्री - आना ब्लांडिआना (मूल नाम : ओतेलिया वालेरिया कोमां)
संकलन - सच लेता है आकार, समकालीन रोमानियाई कविता
चयन/संपादन - आन्द्रीआ देलेतान्त, ब्रेण्डा वाकर
अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद - रणजीत साहा
प्रकाशक - साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 2002

तर्जनी

दिसंबर 2022 : अंक- 2

संपादक मंडल

पूर्वा भारद्वाज

देवयानी भारद्वाज

नासिरुद्दीन

आवरण चित्र

अमृता शेरगिल

परिकल्पना व डिज़ाइन

नासिरुद्दीन

(सभी तरह के संपादन कार्य पूर्णतः अवैतनिक हैं। तर्जनी में प्रकाशित रचनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना ज़रूरी नहीं है।)

निजी और सीमित वितरण के लिए प्रकाशित ई-पत्रिका

ईमेल

TarjaneePatrika@gmail.com

इस अंक में...

कविता

चीख़

अपनी बात

आज़ादी और स्त्री

मुक्तिकामी

अब्बक्का : तुलुनाडु की रानी

रख्माबाई : आज़ादी की अभिलाषा

नुपी लान : सामूहिक नेतृत्व और ताक़त का प्रतीक

ज़ूनी गुज्जरी : कश्मीर की लड़ाकू

प्रकाशवती पाल: लाहौर से लखनऊ तक

आज़ादी की डगर

आज़ादी के हुदूद: मक्तूबाते हुस्न आरा

नए संविधान के तहत स्त्रियाँ

स्त्री अस्मिता और फ़िल्में

छवि-निर्माण

भारत माता: कैथरीन मेयो

किसकी कैसी भारत माता

तर्जनी

आज़ादी और स्त्री

आज़ादी शब्द से ही बंधन और जकड़न की मौजूदगी का पता चलता है। उसके स्वरूप से ही पता चलता है कि कैसी आज़ादी चाहिए और किसको आज़ादी चाहिए। 'तर्जनी' के इस अंक में हम 'आज़ादी और स्त्री' के बारे में बात करेंगे। इस विषय का विस्तार बहुत है। कहाँ से शुरू करें और कहाँ खत्म करें ? आज़ादी का प्रश्न अनादि और अनंत है, खासकर स्त्री के लिए।

दिक्कत है कि हम आज़ादी की लड़ाई को को केवल अंग्रेज़ों से, उपनिवेशवाद से मुक्ति के संघर्ष तक सीमित कर देते हैं। जबकि किसी भी प्रकार की असमानता, अन्याय और नियंत्रण के खिलाफ़ होनेवाला संघर्ष आज़ादी का है। हम अपने इतिहास को पलट कर देखें तो बहुत बार दोनों की दिशा एक होती है तो बहुत बार अलग अलग होती है। दोनों में तनाव भी हो सकता है और दोनों एक-दूसरे से उदासीन भी हो सकते हैं।

यहाँ हम इतिहास के पन्नों को पलटते हुए 'आज़ादी और स्त्री' के कुछ पक्षों की झलक ही दे पा रहे हैं। अगले अंक में भी कुछ सामग्री इस विषय पर आएगी। इस अंक की सामग्री में नए-पुराने मौलिक लेख हैं जिनमें अनूदित लेख भी हैं। इन सबको हमने तीन खंडों में बाँटा है - 'मुक्तिकामी', 'आज़ादी की डगर' और 'छवि-निर्माण'।

'मुक्तिकामी' खंड में देश की आज़ादी के 75 साल हो रहे हैं तो उपनिवेशवादी शक्तियों से टकराने के संदर्भ में औरतों की भूमिका पर निगाह डाला गया है। उसी के साथ औरतों की जेंडर आधारित बंधनों से आज़ादी के संघर्ष को रेखांकित किया गया है। ये दोनों कब आपस में घुल-मिल जाते हैं और कब अपना अलग अलग रास्ता पकड़ते हैं, यह भी विचारणीय है।

'आज़ादी की डगर' खंड में अलग अलग क्षेत्रों में आज़ादी और स्त्री का मतलब क्या है, इसे देखा गया है। औरतों के राजनीतिक अधिकारों की लड़ाई की यात्रा के साथ सिनेमा की दुनिया में औरतों की यात्रा को दर्ज करता लेख है।

'छवि-निर्माण' खंड में 'भारत माता' की छवि को लेकर जो विमर्श रहा है, उसे कैथरीन मेयो की चर्चित किताब 'मदर इन्डिया' के अनुवाद और एक ताज़ातरीन लेख के ज़रिए सामने लाया गया है।

और यह अंक काफ़ी देर से निकल रहा है, इसका हमें खेद है। अपनी तरफ से और अधिक प्रयास करने की ज़रूरत को हम शिद्दत से समझ रहे हैं। आशा है कि रचनाकारों का सहयोग भी मिलेगा।

अंक पर सबकी प्रतिक्रिया का इंतज़ार है।

अब्बक्का: तुलुनाडु की रानी

आज़ादी की लड़ाई की कहानी में महिलाओं की गाथा में "खूब लड़ी मर्दानी" झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम सबसे पहले आता है। उनके अलावा कित्तूर की रानी चेनम्मा, बेगम हजरत महल आदि का नाम आता है। धीरे-धीरे रानी की उपाधि से विभूषित नागालैंड की गाइदिनल्यू, रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी और झलकारी बाई मक़बूल होने लगी हैं। इस सूची में हाशिये पर डाल दिए गए समुदाय की महिलाओं के नाम जुड़ते ना रहे हैं। तब भी उनमें आम महिलाएँ काफी कम हैं। यहाँ ***पूर्वा भारद्वाज*** *।6वीं -17 वीं सदी में पुर्तगालियों से लड़नेवाली पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी रानी अब्बक्का चौंटा की बात कर रही हैं।*

रानी अब्बक्का। *स्रोत : इंटरनेट*

अब्बक्का दक्षिण भारत के समुद्र तटीय प्रदेश तुलुनाडु की रानी थीं। उनके समय को लेकर इतिहासकार एकमत नहीं हैं। एक हिस्सा मानता है कि उनका जन्म 1525 ई. में हुआ और 1570 ई. के आसपास उनकी मृत्यु हुई। वहीं काफ़ी लोग उनका शासन काल 1554 से 1588 ई. मानते हैं। उनका शासन क्षेत्र निस्संदेह तुलुनाडु है। दक्षिणी कर्नाटक और उत्तरी केरल का यह हिस्सा तुलु भाषा (द्रविड़ भाषा परिवार की प्राचीन भाषा) बोलनेवालों का इलाका है। यहाँ के लोगों को तुलुवा कहते हैं।

अब्बक्का का जन्म मंगलोर के पास के मातृवंशीय परंपरा के चौटा राजघराने में हुआ था। यह दिगंबर जैन धर्मावलंबी राजघराना था जो कई सदी पूर्व गुजरात से आकर यहाँ बस गया था। मातृवंशीय परंपरा के तहत अब्बक्का को उल्लाल

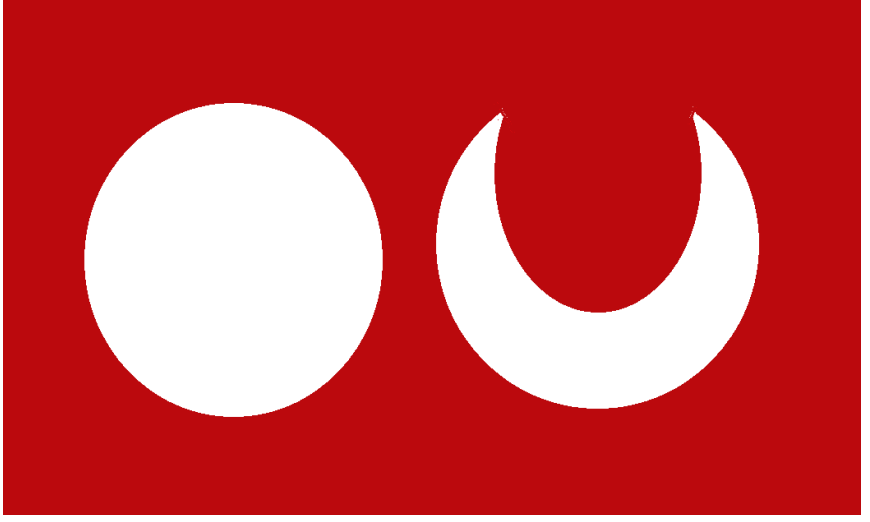

तुलुनाड़ु का झंडा। *स्रोत : इंटरनेट*

की गद्दी मिली। तीर-धनुष चलाने, तलवारबाज़ी, घुड़सवारी और युद्ध कला की पारंपरिक शिक्षा अब्बक्का को बचपन से ही मिल रही थी।

अब्बक्का के मामा ने रणनीतिक कारणों से उनका विवाह बंगा राजा लक्षमप्पा अरसा से करवा दिया। कहते हैं कि अब्बक्का उल्लाल में रहीं, बीच-बीच में बंगा राजा के पास जाती थीं। दोनों के रिश्ते मधुर नहीं थे। निजी मामलों से लेकर राज-काज के तरीकों तक में पति-पत्नी में काफी मतभेद था। पुर्तगालियों के समर्थक अपने पति की नीतियाँ अब्बक्का को भाईं नहीं और वे हमेशा हमेशा के लिए अपने उल्लाल नगर लौट आईं। उन्होंने अपने तीनों बच्चों को अपने पास रखा। विवाह में मिले सारे उपहार तक लौटा दिए और पति से अलग अपना जीवन जीने लगीं। उनकी दो बेटियों ने आगे चलकर अब्बक्का की गद्दी सँभाली और शान से उल्लाल पर राज किया। उन तीनों को अब्बक्का नाम से जाना जाता है। उन तीनों के किस्से और कारनामे इतने घुले-मिले हैं कि पता ही नहीं चलता कि कोई खास घटना वरिष्ठ रानी अब्बक्का के ज़माने में घटित हुई थी या उनकी बेटी रानी अब्बक्का के ज़माने में।

इटली के यात्री पिएत्रो डेला वेल (Pietro Della Valle) ने मंगलोर के पास की रानी से अपनी मुलाकात के बारे में लिखा है। यह सीनियर रानी अब्बक्का की बेटी यानी 1595-1640 के बीच शासन करनेवाली जूनियर रानी अब्बक्का का ब्यौरा है। पिएत्रो डेला वेल के मुताबिक इस रानी का कोई राजसी ठाठ-बाट नहीं था। वे उनसे मिलने उल्लाल आए तो उन्हें मालूम हुआ कि अब्बक्का समुद्र तट के पास के कुंजों में बने अपने 'महल' में नहीं हैं। वहाँ वे कभी कभी ही आती हैं क्योंकि वे अपना अधिक समय जनता के बीच गुज़ारती हैं। उस समय भी वे सिंचाई का काम देखने किसी गाँव में गई हुई थीं।

अपने लिए रुकने की जगह तलाशते विदेशी यात्री पिएत्रो डेला वेल की बाज़ार में रानी अब्बक्का से मुलाकात हुई। वे नंगे पैर चलनेवाली, फुर्तीली, (स्थूल) गुलथुल, गहरी साँवली, सफेद मोटी सूती साड़ी में रानी को देखकर चकित थे। दिसंबर, 1623 के पत्र में वे लिखते हैं - साथ में कोई औरत नहीं थी, केवल चार-पाँच पैदल अधनंगे से सिपाही थे जिनके हाथ में तलवार थी। एक रानी के ऊपर ताड़ के पत्तों से बना छाता लेकर चल रहा था। रानी की उम्र रही होगी 40 के आसपास। शरीर का ऊपरी हिस्सा निर्वस्त्र था,